भीतर एवं बाहर का सच

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हमारे सामने दो जगत् हैं। बाहर का जगत जिसे हम खुली आंखों से देखते हैं और अन्दर का जगत् जो हमें दिखाई नहीं देता। बाहर का जगत् भौतिक जगत है। यह जड़ जगत् कहलाता है। यह गलन मिलन धर्मा है। सतत् परिवर्तनशील है। इसका अस्तित्व क्षणिक है। भीतर का जगत् शाश्वत् है। भीतर के जगत् अथवा आत्मा के अस्तित्व से ही यह जगत् अस्तित्ववान है। शरीर किराये का मकान है। आत्मा ही इसका मालिक है। जब मकान मालिक मकान से निकाल देता है तो दूसरा मकान खोजना पड़ता है। शरीर और आत्मा की भी यही गति है।

स्वयं का घर किसको पसन्द नहीं रहता? गृहस्थ या तो स्वयं के घर में रहता है या किसी किराये के मकान में। जिस घर में हम रहते हैं वह भौतिक है। शरीर आत्मा का घर है। शरीर के नष्ट होने पर यह घर छूट जाता है। आत्मा का अपना निजी घर है वह सदैव रहता है। भौतिक तत्व किराये का मकान है। वह आज है कल नहीं रहेगा। किराये का मकान अपना नहीं होता। किराये का मकान कामचलाऊ होता है। मकान मालिक जब चाहे तब घर खाली करवा सकता है। किराये के घर में मनुष्य कुछ समय तक ही रहता है। आज यहां कल वहां और परसों कहां रहेगा इसका पता नहीं। यदि मकान स्वयं का रहे तो कोई खाली नहीं करवा सकता। स्वयं के मकान में शान्ति और सुख की अनुभूति होती है। भौतिक शरीर रूपी घर एक दिन छोड़ना ही पड़ता है। गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है।

भौतिक शरीर नव द्वारों वाला है। इन द्वारों से हमें संवेदन प्राप्त होता है। शरीर के नष्ट होने के साथ ये सब नष्ट हो जाते हैं। केवल आत्मा ही बचता है। आत्मा ही स्थाई है और सब अस्थाई। नकली वस्तु को असली नहीं बनाया जा सकता। अनेक धातुएं चमकती हैं। सबका गुण धर्म अलग–अलग है। सोना भी चमकता है और पीतल भी किन्तु सोने की चमक अलग

होती है और पीतल की चमक अलग। कोई भी व्यक्ति चमक के आधार पर वस्तुओं का परीक्षण कर लेता है। आज के युग में नकली वस्तुओं को असली से भी आकर्षण युक्त बनाया जा रहा है जिससे मनुष्य आकर्षित होकर खरीद लें और बाद में धोखा खा जाये। बाजार में असली और नकली दोनों वस्तुओं की भरमार है। जो जिस वस्तु को चाहता है वह उस वस्तु को खरीद सकता है। किन्तु कभी–कभी दुकानदार ग्राहक को असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु दे देता है। जिससे ग्राहक ठगा जाता है। नकली वस्तु में तड़क भड़क अधिक रहता है। उसमें आंतरिक गुण नहीं रहता। इसी को ढ़ोल के अन्दर पोल भी कहा जा सकता है।

मानव के सामने दो जगत हैं– लौकिक जगत और आध्यात्मिक जगत। लौकिक जगत् पांच इन्द्रियों का जगत है। इस जगत में सभी प्राणी रहते हैं और अपनी चेतना का विकास करते हैं। कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जो इस लौकिक जगत से परे आध्यात्मिक जगत का चिंतन करते हैं और अपनी आत्मा का विकास करते हैं। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। आध्यात्मिकता के ही कारण भारत को विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त है। प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियों के मेल से जो संक्रमण आया भौतिक समृद्धि उसी का परिणाम है। हमारे देश में सर्वप्रथम आत्मचिंतन हुआ। हम कौन हैं? कहां से आये हैं? मरने के बाद यहां से आत्मा कहां जाती है। आत्मा का अस्तित्व है या नहीं इन सब विषयों पर भारतीय वाङ्मय में गम्भीर चिंतन हुआ है।

भारतीय चिंतकों ने भौतिक समृद्धि को अधिक महत्व नहीं दिया। उनके विचार में धन नश्वर है। आज है कल नहीं रहेगा। इसलिए ऐसी सम्पदा को प्राप्त किया जाये जिसका अस्तित्व त्रिकाल में वर्तमान रहता है। इसलिए भारतीय शास्त्र वेत्ताओं ने अपने चिंतन के केन्द्र में आत्मा को रखा। भौतिक सम्पत्ति विनश्वर है और आध्यत्मिक सम्पत्ति शाश्वत। जीवन की समग्र समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने के लिए हमें उसके दोनों पक्षों को समझना आवश्यक है। एक वह है जो शरीर से सम्बन्धित है और दूसरा वह है जो अन्तरात्मा पर निर्भर है। शरीर की समस्याओं और आवश्यकताओं का सीधा सम्बन्ध भौतिक सुखों से है। भोजन, वस्त्र और निवास की सुविधाएं तथा इंद्रियों के अपने–अपने विषय शरीर से संबंधित है। ये

वस्तुएं उचित समय पर और उचित मात्रा में जब मिलती रहती हैं तो शरीर की तुष्टि होती रहती है।

पंचज्ञानेन्द्रिय, पंचकर्मेन्द्रिय और मन ये एकादश इंद्रियां है। मन का विषय है लोभ, मोह और अहंकार ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय और मन की जितनी मात्रा में संतुष्टि होती है उतना ही शरीर प्रसन्न रहता है। जीवन का अर्थ है– जन्म से मृत्यु के बीच का समय। जीवनयापन तो संसार के सभी प्राणी करते हैं किन्तु कौन कैसे जीता है? यह महत्वपूर्ण है। जीवन मानव, दानव, पशु–पक्षी सभी यापन करते हैं। सभी की दिनचर्या अलग–अलग है। धर्म एक ऐसा तत्व है जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करता है।